प्रश्न : ईश्वर को पाने का सरलतम मार्ग कौन सा है?

कृष्णमूर्ति : मुझे लगता है कि कोई सरल मार्ग नहीं है क्योंकि ईश्वर को पाना अत्यंत कठिन, अत्यधिक श्रमसाध्य बात है। जिसे हम ईश्वर कहते हैं; क्या मन ही ने उसका निर्माण नहीं किया है? आप जानते ही हैं कि मन क्या होता है? मन समय का परिणाम है, और यह कुछ भी, किसी भी भ्रांति को निर्मित कर सकता है। धारणाओं को बुनने की तथा रंगीनियों और कल्पनाओं में अपना प्रक्षेपण करने की शक्ति इसके पास है। यह निरंतर संचय, काट-छांट और चयन करता रहता है। संकीर्ण, सीमित तथा पूर्वाग्रहों से ग्रसित होने के कारण, यह अपनी सीमाओं के अनुसार ईश्वर की कल्पना कर सकता है, उसकी छवि बना सकता है। चूंकि कुछ खास शिक्षकों, पुरोहितों तथा तथाकथित उद्धारकर्ताओं ने कह रखा है कि ईश्वर है, और उसका वर्णन भी कर दिया है, इसलिए उसी शब्दावली में मन ईश्वर की कल्पना तो कर सकता है; लेकिन वह कल्पना, वह छवि ईश्वर नहीं है। ईश्वर का अन्वेषण मन द्वारा नहीं किया जा सकता।

ईश्वर को समझने के लिए पहले आपको अपने मन को समझना होगा, जो बहुत कठिन है। मन बहुत पेचीदा है और इसे समझना सरल नहीं है। बैठे-बैठे किसी प्रकार के सपने में खो जाना, विविध दिव्य दर्शनों तथा भ्रांतियों में लीन हो जाना और यह सोचने लगना कि आप ईश्वर के बहुत करीब आ गए हैं, यह सब तो काफी सरल है। मन अपने साथ अतिशय छल कर सकता है। अतः जिसे ईश्वर कहा जा सकता है उसका अनुभव करने के लिए आपको पूर्णतः शांत होना होगा; और क्या आपको यह मालूम नहीं है कि यह कितना अधिक कठिन है? क्या आपने ध्यान दिया है कि वयस्क लोग कभी भी शांत नहीं बैठ पाते हैं, वे किस तरह बेचैन रहते हैं, पैर की उंगलियां हिलाते रहते हैं, हाथों को डुलाते रहते हैं? शारीरिक रूप से ही निश्चल बैठ पाना कितना दुःसाध्य है, मन का निश्चल होना तो और भी कितना ज़्यादा मुश्किल है? आप किसी गुरु का अनुगमन कर सकते हैं और अपने मन को शांत होने के लिए बाध्य कर सकते हैं, पर आपका मन वस्तुतः शांत नहीं होता। यह अब भी बेचैन होता है, जैसे कि किसी बच्चे को कोने में खड़ा कर दिया गया हो। बिना किसी ज़ोर-ज़बरदस्ती के पूर्णतः मौन होना, मन की एक महान कला है। केवल तभी उसकी अनुभूति हो पाने की संभावना होती है, जिसे ईश्वर कहा जा सकता है।

प्रश्न : क्या ईश्वर सब जगह है?

कृष्णमूर्ति : क्या यह पता लगाने में सचमुच आपकी रुचि है? आप प्रश्न करते हैं और फिर दिलचस्पी खो देते हैं, आप फिर सुनते ही नहीं। क्या आपने यह ध्यान दिया है कि किस तरह वयस्क लोग आपको लगभग सुनते ही नहीं हैं? चूंकि वे अपने विचारों, अपनी भावनाओं, अपनी संतुष्टियों तथा दुःखों से इतने घिरे रहते हैं कि वे आपकी बात कभी-कभार ही सुनते हैं। उम्मीद है, आपने इस पर ध्यान दिया है। अगर आप जानते हैं कि अवलोकन कैसे करना है, सुनना कैसे है, वस्तुतः सुनना, तब आपको न केवल लोगों के विषय में, बल्कि संसार के विषय में भी ढेर सारी बातें पता चलेंगी।

यह लड़का पूछ रहा है कि क्या ईश्वर सब जगह है। यह प्रश्न पूछने के लिए अभी यह बहुत छोटा है; वस्तुतः इसका अर्थ क्या है, यह भी उसे नहीं मालूम है। शायद उसे किसी चीज का अस्पष्ट सा आभास है--सुंदरता की भावना, आकाश में उड़ते पक्षी, बहता दरिया, मुस्कुराता सलोना चेहरा, हवा में नृत्य करते पत्ते तथा बोझा ढोती स्त्री--इन सब के होने का एहसास; और क्रोध, कोलाहल, दुःख, जो हर तरफ है, तो आखिर ज़िन्दगी है क्या, यह पता लगाने में उसकी स्वाभाविक रुचि और उत्सुकता है। वह अपने से बड़ों को ईश्वर के बारे में बातें करते सुनता है और सोचता है, यह क्या गोरखधंधा है। इस प्रकार का प्रश्न

करना उसके लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, क्या ऐसा नहीं है? और उसके प्रश्न के उत्तर की तलाश आप सबके लिए भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि जैसा कि मैंने उस दिन कहा था, आप इन सब बातों का अर्थ अंदरूनी तौर पर, अचेतन रूप से गहरे में समझना शुरू कर देंगे, और फिर जैसे-जैसे आप बड़े होंगे, संघर्षों की भद्दी दुनिया के अलावा कुछ और चीज़ों के संकेत भी आपको मिलने लगेंगे। यह विश्व सुंदर है, यह धरती इतना देती है, परंतु हम ही इसके लुटेरे हैं।

प्रश्न : जीवन का वास्तविक लक्ष्य क्या है?

कृष्णमूर्ति : सबसे पहले तो यही है कि आप इसका करते क्या हैं? जीवन का लक्ष्य वही है, जो आप जीवन को बनाएंगे।

प्रश्न : जहां तक यथार्थ का प्रश्न है, यह तो कुछ और ही होगा। व्यक्तिगत लक्ष्य में मेरी कोई विशेष दिलचस्पी नहीं है, पर मैं यह जानना चाहता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य क्या है?

कृष्णमूर्ति : आप कैसे पता लगाएंगे? कौन बताएगा आपको? पढ़ने से क्या आप इसे खोज सकते हैं? अगर आप पढ़ते हैं, तो हो सकता है, एक ग्रंथकार आपको कोई विशिष्ट पद्धति दे, जबकि कोई अन्य ग्रंथकार एक सर्वथा भिन्न पद्धति बताए। जो मनुष्य दुःखी है, अगर आप उसके पास जाएं, तो वह कहेगा कि जीवन का लक्ष्य प्रसन्न होना है। जो मनुष्य भूखा जी रहा है, जिसने वर्षों से पर्याप्त भोजन नहीं किया, उसका लक्ष्य होगा कि पेट भरा होना चाहिए। अगर आप किसी राजनीतिज्ञ के पास जाएं, तो संसार के शासकों, संचालकों में उसकी गिनती हो, यही उसका लक्ष्य होगा। अगर आप किसी युवा औरत से पूछें तो वह कहेगी, ''मैं मां बनूं, यही मेरा लक्ष्य है''। अगर आप एक संन्यासी के पास जाएं, तो उसका उद्देश्य ईश्वर को पाना है। तो यह लक्ष्य, लोगों की भीतरी चाह, कुछ ऐसा पाने की है, जो परितोषप्रद तथा आरामदायक हो; वह एक प्रकार की सलामती चाहते हैं, सुरक्षा चाहते हैं, ताकि कोई संशय, प्रश्न, व्यग्रता या भय न रहे। हममें से अधिकांश एक स्थायी वस्तु चाहते हैं, जिससे चिपके रह सकें, ऐसा ही है न?

अतः मनुष्य के लिए जीवन का सामान्य लक्ष्य किसी तरह की आशा, कोई सुरक्षा, किसी प्रकार का स्थायित्व है। यह मत कहिए, ''बस, यही सब है?'' यह तो तात्कालिक तथ्य है। आप को इससे अच्छी तरह परिचित होना होगा। इस सब पर आपको प्रश्नचिह्न लगाना होगा। इसका अर्थ है, आप को ख़ुद पर सवाल खड़ा करना होगा। चूंकि आप समग्र के अंश हैं, इसलिए मनुष्य के लिए जीवन का सामान्य लक्ष्य आप ही से जुड़ा है। आप स्वयं सुरक्षा, स्थायित्व, प्रसन्नता चाहते हैं; आप कुछ ऐसा चाहते हैं, जिससे आप चिपके रह सकें।

इस सबके पार भी क्या कुछ है, कोई सत्य जो मन के क्षेत्र का नहीं है, यह पता लगाने के लिए मन की सभी भ्रांतियों की आहुति दे देनी जरूरी है, यानी कि आप उन्हें समझ लें और एक तरफ कर दें। केवल तभी आप यथार्थ तत्त्व को खोज पाते हैं। यह शर्त जोड़ना कि लक्ष्य होना चाहिए, या यह विश्वास करना कि लक्ष्य होता ही है, भ्रांति के ही अन्य रूप हैं। अपने सारे द्वंद्वों, संघर्षों, पीड़ाओं, मिथ्याभिमान, महत्त्वाकांक्षा, आशा, भय--इन सब पर आप अगर प्रश्नचिह्न लगा सकें, और इन सबसे गुज़र सकें, इन सबके पार जा सकें, इनसे ऊपर उठ सकें, तो आपको उत्तर मिल जाएगा।

प्रश्न : अगर मैं आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित कर लूं, तो क्या मैं अंततः परम के दर्शन कर सकता हूं?

कृष्णमूर्ति : जब तक आपके और उसके बीच इतने अवरोध हैं, आप परम के दर्शन कैसे कर सकते हैं? सर्वप्रथम आपको अवरोध हटाने होंगे। बंद कमरे में बैठ कर आप यह नहीं जान सकते कि ताज़ी हवा कैसी होती है। ताज़ी हवा के वास्ते आपको खिड़कियां खोलनी होंगी। आपको अपनी सभी प्रतिबद्धताओं, सीमाओं और अवरोधों को देखना होगा तथा समझ कर इन्हें परे हटा देना होगा। तब आपको पता लग जाएगा। पर इस पार बैठे रहकर यह पता लगाने की कोशिश करना कि उस तरफ क्या है, इसका तो कोई अर्थ नहीं है।

'लाइफ अहेड', अध्याय 7